पोश-पूज़ा

पोशपूज़ा

प्रकाशक :—

प्रेमनाथ शास्त्री

मूल्य : 10/-

एक-एक श्लोक के पढ़ने की समाप्ति पर ही सभी पोशपूज़ा पर इकट्ठे हुये एक साथ पुष्पाञ्जलि डालते रहें। किस श्लोक की समाप्ति पर वर को अथवा वधू को फूल डालने हैं–हर श्लोक की समाप्ति पर उसका संकेत दिया गया है, लगातार अथवा आगे-पीछे फूल डालना धर्मशास्त्र के विरुद्ध है।

नोट :— इसी पोशपूज़ा का कैस्ट **प्रेमनाथ शास्त्री** की ज़बान से भरा हुआ है–**पोशपूज़ा** की पुस्तकें सभी नागरी लिपि के ज्ञान वाले हाथ में पकडें–कैस्ट चालू रखिये उस–कैस्ट के साथ-साथ पढ़ते जायें–ऐसा करने से आप शुद्ध पढ़ सकेंगे।

ज्योत्-कारं क्रमते चैव ...... स्वस्तिना परिपठ्यते

विप्रेण ह्याशिषं कुर्यात् ...... विष्णु-र्वचनं-अब्रवीत्

विष्णु-र्वा त्रिपुरान्तको भवतु वा ...... ब्रह्मा सुरेन्द्रोऽथवा

भानु-र्वा शश-लक्ष्णोऽथ भगवान् ...... बुद्धोऽथ सिद्धोऽथवा

राग-द्वेष-विषार्त्ति-मोह-रहितः ...... सत्त्वानु-कम्पो-द्यतो

यः सर्वैः सह संस्कृतो गुणगणैः ...... तस्मै नमः सर्वदा।। 1 ।।

वधूवर दोनों पर फूल डालिये

प्रसन्न-मूर्तिः स्थिर-मन्त्र-विग्रहः ......

समग्रशक्तिः - जगत्-एक बान्धवः

मापतिः खण्ड-शशाङ्क-शेखरो-

जयत्य-नाथार्ति-हरो महेश्वरः।। 2 ।।

वर पर फूल डालिये।

गायत्री ब्रह्मणो यत्-वत्-लक्ष्मी-दैत्य-रिपो-यथा

उमा यथा महेशस्य, तथा त्वं भव भर्तरि।। 3 ।।

वधू पर फूल डालिये।

सुवर्चला यथार्कस्य, यथा चन्द्रस्य रोहिणी

मदनस्य रति-र्यत्-वत्, तथा त्वं भव भर्तरि।। 4 ।।

वधू पर फूल डालिये।

सुदक्षिणा दिलीपस्य, वसन्तस्य धृति-यथा

अरुन्धती वसिष्ठस्य, तथा त्वं भव भर्तरि।। 5 ।।

वधू पर फूल डालिये।

रामस्य च यथा सीता, विनता कश्यपस्य च
पावकस्य यथा स्वाहा, तथा त्वं भव भर्तरि।। 5 ।।

वधू पर फूल डालिये।

उषा यथाऽनिरुद्धस्य, दमयन्ती नलस्य च
सती च ऋतु-पर्णस्य, तथा त्वं भव भर्तरि।। 6 ।।

वधू पर फूल डालिये।

यथा गौरी महेशस्य, यथा स्वर्ग-पतेः-शची।
यथा श्रीः श्रीधरस्यैव-तथा त्वं भवर्भतरि।। 7 ।।

वधू पर फूल डालिये।

पुलोमजा यथेन्द्रस्य, यथा-गस्त्यस्य रोहिणी।
देवकी वसुदेवस्य, तथा त्वं भव भर्तरि।। 8 ।।

वधू पर फूल डालिये।

शन्तनो-श्च यथा गङ्गा, सुभद्रा ह्य-र्जुनस्य च।
धृतराष्ट्रस्य गान्धारी, तथा त्वं भव भर्तरि।। 9 ।।

वधू पर फूल डालिये।

धन-पुत्र-वती साध्वी, सततं भर्तृ-वल्लभा।
मनोज्ञा ज्ञान-सहिता विष्ठ त्वं शरदां शतम्।। 10 ।।

वधू पर फूल डालिये।

यथेन्द्राणी हरिहये, स्वाहा चैव विभावसौ।
रोहिणी च यथा चन्द्रे, दमयन्ती यथा नले।। 11 ।।

वधू पर फूल डालिये।

यथा वैश्रवणे भद्रा वसिष्ठे वाप्य-रुन्धती।
यथा नारायणे लक्ष्मीः, तथा त्वं भव-भर्तरि।। 12 ।।

वधू पर फूल डालिये।

जीवसूः वीरसूः भद्रा, बहु-सौख्य समन्विता।
सुभगा भोगसंपन्ना, यज्ञपत्नी मनो-व्रता।। 13 ।।

वधू पर फूल डालिये।

अतिथीन्-आगतान्-साधून्,
बालान्-वृद्धान्-गुरून्-अपि।
पूज्य-यन्त्या यथा-न्यायं,
शश्वत्-गच्छन्तु ते समाः।। 14।।

वधू पर फूल डालिये।

पृथिव्यां यानि रत्नानि, गुणवन्ति गुणान्विते।
तान्याप्नुहि त्वं कल्याणि, सुखिनी शरदां शतम्।। 15 ।।

वधू पर फूल डालिये।

लक्ष्मी-र्यथा सकल-देव-गणारि-शत्रौ
यथा पशुपतौ च शची सुरेन्द्रे।
गायत्र्य-पीह परमेष्ठिनि नित्यरक्ता
तत्-वत्-भव त्वं-अपि, भर्तरि-नित्यरक्ता।। 16 ।।

वधू पर फूल डालिये।

सीता यथा दशरथस्य सुते प्रवीरे
प्रीति-र्यथा स्तुति-करे च, रतिश्च-कामे।
सूर्येऽनु-रक्त-हृदया-थ, सुवर्चला सा
तत्-वत्-भव-त्वमपि भर्तरि नित्य-रक्ता।। 17 ।।

वधू पर फूल डालिये।

सा रोहिणी निगदिता च यथा शशांके
नित्यं यमे-प्यथ यमी च यथानु-रक्ता।
हंसावली नृपसुता कमलाकरे वा
तत् वत्-भव त्वं अपि भर्तरि-नित्य रक्ता।। 18 ।।

वधू पर फूल डालिये।

बाणाख्य दैत्यतनया च, यथा-निरुद्धे
यत्-वत्-नले नरपतौ दमयन्त्य-पीह।
स्वाहा यथा हुतभुजीह सदानु-रक्ता
तत्वत्-भव त्वं-अपि-भर्तरि-नित्यरक्ता।। 19 ।।

वधू पर फूल डालिये।

सुदक्षिणा चापि-नृपे दिलीपे
ह्यरुन्धती चापि मुनौ वसिष्ठे।
गाढानु-रक्ता भवतीह-यत्-वत्
तत् वत् भव त्वं-अपि भर्तरि-नित्य-रक्ता।। 20 ।।

वधू पर फूल डालिये।

यत्-वत्-लक्ष्मी-मधु-मथनयोः पद्मिनी सूर्ययोर्वा।
यत्-वत्-नित्यं रजनि-शशनोः, पत्त्रिणोः-चक्रनाम्नोः।
गाढ-प्रेम्णो भवति शिक्योः, सुप्रसिद्धिश्च यत्वत्।
जाया-पत्यो-र्भवतु युवयोः-तत्-वत्-एवाच लोके।।

दोनों वर वधू पर फूल डालिये।

अति-रमणीया-कृत्योः-समवयसोः प्रो-ल्लसत्-प्रेम्णोः।
वधूवरयो-र्नूनं पाणिग्रहणं शिवायास्तु ।। 22 ।।

दोनों वर-वधू पर फूल डालिये।

यत्-मंगलं शैल-सुताविवाहे, हरस्य दत्तं कमलासनेन।
तन्मंगलं देव विवाहकाले ददामि तेव देव-मुनि-प्रणीतम्।।

वर पर फूल डालिये।

पद्मा-माधवयो-नगेन्द्र-तनया-नागेन्द्रकेयूरयोः
स्वाहा-पावकयोः-अमर्त्य-तटिनी, कल्लोलिनी-नाथयोः।
पौलोमी-पुरुहूतयो रति-रति-प्राणेशयोः प्रेमवत्
दम्पत्योः-र्युवयो-श्चिरं भवतु-सौभाग्य-भाग्योदयः।।24

दोनों वर-वधू पर फूल डालिये।

अक्षतौषधि-तिलाश्च शाद्वला-धूपदीप-कुसमानि चन्दनम्।
माक्षिकं दधिसशर्करं पयो,-मंगलं ददतु वोऽभिषेकजम्।।

दोनों वर-वधू पर फूल डालिये।

धातृ-केशव-शिवाः-सुपूजिताः,

षणा्-मुखोथ मदनो विनायकः।

अश्विनौ धनपति-र्विभावसु-

मंगलं ददतु वोभिषेकजम्।। 26 ।।

दोनों वर-वधू पर फूल डालिये।

शुक्रवह्नि-यम-नैर्ऋतापति-मातरिश्वनरवाहनादयः।

शम्भु-पद्मज-हलायुधा-सुराः, मंगलं ददतु वोऽभिषेकजम्।।

दोनों वर-वधू पर फूल डालिये।

अत्रि-कश्यप-वसिष्ठ-गौतमा,

व्यास-गालव पुलस्त्य-कौशिकाः

गाधि नन्दन कणाद-शौनका,

मंगलं ददतु वोऽभिषेकजम् ।। 28 ।।

दोनों वर-वधू पर फूल डालिये।

सूर्यसोम-कुज-चन्द्र-नन्दना,

जीव, शुक्र, शनि, राहु, केतवः।

पक्षिरूप-घटजौ च ये ग्रहाः,

मंगलं ददतु वोऽभिषेकजम्।। 29 ।।

दोनों वर-वधू पर फूल डालिये।

मेष-गोमिथुन-कर्कटा-स्तथा सिंहकन्यतुल-कीट-धन्विनः।

मार्ग कुम्भ जलजास्तु राशयो, मंगलं ददतु वोभिषेकजम्।।

दोनों वर-वधू पर फूल डालिये।

मार्ग-पौष-तप-फाल्गुणा, मधुराध-शुक्ल-शुचयस्तथा नभाः।
भाद्र आश्वयुज-कार्तिकौ-अमी, मंगलं ददतु वोऽभिषेकजम्।।

दोनों वर-वधू पर फूल डालिये।

मेरु-मन्दर-हिमाद्रि-रैवता, विन्ध्य-सह्य मलयाख्य-दुर्दराः।
गन्ध-मादन-शिवालया, अमी मंगलं ददातु वोऽभिषेकजम्।।

दोनों वर-वधू पर फूल डालिये।

तार्क्ष्य-जैमिनि-जटायु-जम्पला-श्चित्र-सेन, द्विज हंस दुर्दुराः।
सम्पति-स्त्रिदश-वायसो-रुणो, मंगलं-ददातु-वोऽभिषेकजम्।।

दोनों वर-वधू पर फूल डालिये।

क्षार-सिन्धु-रस-नीरसागराः, क्षीर-सैन्धव-गुडास्तथा धृताः।
क्षौद्र-दुग्ध-सहिना महार्णवा, मंगलं ददतु वोऽभिषेकजम्।।

दोनों वर-वधू पर फूल डालिये।

शेष-तक्षक-मलाहि-वासुकि, शंख-पाल-पणि-पद्मपुष्करा।
मानसो विमल-नील-नागराट् मंगलं ददतु वोऽभिषेकजम्।।

दोनों वर-वधू पर फूल डालिये।

राम-लक्ष्मण-दिलीप-भार्गवाः-सत्यकेतु-नल-भीष्म-पाण्डवाः।
धर्म-दत्त-शिवि-वैन्य-कश्यपा-मंगलं ददतु वोऽभिषेकजम्।।

दोनों वर-वधू पर फूल डालिये।

जनकी-सह सुतैः-अरुन्धती मालती शशिमती सुदक्षिणाः।
द्रौपदी च दमयन्त्यथो-र्मिला, मंगलं ददतु वोऽभिषेकजम्।।

दोनों वर-वधू पर फूल डालिये।

जाह्नवी शशिभवा गोदावरी, नर्मदा च यमुना विपाशिका।
गण्डकी मधुमती सरस्वती, मंगलं ददतु वोऽभिषेकजम्।। 39

दोनों वर-वधू पर फूल डालिये।

पार्वती च कमला शची रतिः, सत्यव त्यपि च रोहिणी तथा।
कौशिकी च विनताथ देवकी, मंगलं ददतु वोऽभिषेकजम्।।

दोनों वर-वधू पर फूल डालिये।

स्वर्धेनु-र्वृषभो हरः-सुरवधू, रम्भाथ कल्पद्रुमो,
नक्षत्रं तिथिवासरौ क्षणम्-अथौ लग्नं मुहूर्त शुभम्।
खं वायुः शशि-भास्करौ च धरिणः-तोयं च वह्निः पुमान्,
इत्येवं परमेश्वर-प्रकृतयः, कुर्वन्तु वां मंगलम्।। 41 ।।

दोनों वर-वधू पर फूल डालिये।

यावत् द्वीपे तरंगैर्वहति सुरनदी, जाह्नवी पुण्यतोया,
यावत्-आकाश-मार्गे तपति दिन करो भास्करो लोक-पालः।
यावत् ब्रह्मा च विष्णुः सुरपति-सहितो वर्तते मेरुशृङ्गे,
तावत् त्वं मर्त्यलोके निजकुल-सहितो, भुँक्ष्व लक्ष्मीं समग्रम्।।

दोनों वर-वधू पर फूल डालिये।

ब्रह्मा वेदपतिः शिवः पशुपतिः शक्रः सराणां पतिः
विष्णु-र्यज्ञपतिः रविः ग्रहपतिः, धर्मः पितृणां पतिः
प्राणो देहपतिः सदागतिर्-अयं, ज्योतिष्पतिः चन्द्रमाः
सर्वे ते पतयः कुवेरसहिताः कुर्वन्तु वां मंगलम्।। 43 ।।

दोनों वर-वधू पर फूल डालिये।

याः स्कन्दस्य जगाद तारकजये, देवः स्वम्भूः स्वयं
स्वः साम्राज्य-महोत्सवेऽपि च शचीकान्तस्य वाचस्पतिः।
ताभिस्तेद्य विरिञ्चि-वक्त्र-सरसी, हंसीभिर्-आशास्महे
वैदीभिश्च सदा विवाह समये मंत्रोक्तिभि-र्मङ्गलम्।। 44 ।।

दोनों वर-वधू पर फूल डालिये।

ब्रह्मा हंसाधिरूढो मुनिगण-सहितो, वेधवत् सृष्टिकर्ता
विष्णुः श्रीशक्ति-धर्ता गरुडरथयुतः, शार्ङ्ग-चक्रादि-हस्तः।
रुद्रः चन्द्रार्ध-मौलि-र्वृषभ-वर-गतो, धौत-धूली-सितांग
आयुः श्रीशक्ति-वीर्यं, ददतु तव गृहे पुत्रपौत्रादि-सौख्यम्।।

दोनों वर-वधू पर फूल डालिये।

लक्ष्मीः कौस्तुभ-पारि-जातक, तरु, धान्वन्तरिः चन्द्रमा
धेनुः काम-दुघा सुरासुर-गजो, रम्भाथ देवाङ्गना
अश्वः सप्तमुख-स्तथा हरिधनुः, शंखो विषं चामृतं
रत्नानीति चतुर्दश प्रतिदिनं कुर्वन्तु वां मंगलम्।। 46 ।।

दोनों वर-वधू पर फूल डालिये।

आदि-त्योग्नि-युतः शशी सवरुणो, भौमः कुमारा-न्वितः।
सौम्यो विष्णुयुतो गुरुः समघवः, देव्या युतो भार्गवः।
सब्रह्मा रविजो गणेश्वर-युतो, राहु-र्ध्वजः सेश्वरो।
मांगल्यं सततं हरार्चनरताः कुर्वन्तु सर्वे ग्रहाः।। 47 ।।

दोनों वर-वधू पर फूल डालिये।

दीर्घायु-र्भव जीव वत्सर-शतं, नश्यन्तु सर्वापदः
स्वास्थ्यं संभज मुञ्च चञ्चलधियं लक्ष्म्येकनाथो भव।
किं ब्रूमो भृगु-गौतमात्रि-कपिल, व्यासादिभि-र्भाषितं
यद्रामस्य पुराभिषेक-समये-तत्-चास्तु ते मंगलम्।।

दोनों वर-वधू पर फूल डालिये।

आयुष्मान्-भव-पुत्रवान् भव भव, श्रीमान् यशस्वी भव
प्रज्ञावान् भव भूरि भूति करुणा-दानैक-निष्ठो भव।
तेजस्वी भव वैरि-दर्पदहन-व्यापार-दक्षो भव
श्री-शम्भो-भव पादपूजनरतः, सर्वोपकारी भव।।

दोनों वर-वधू पर फूल डालिये।

आयु-बलं विपुलं-अस्तु सुखिनम्-अस्तु,
सौभाग्यं-अस्तु विशदा तव कीर्तिर्-अस्तु।
श्रीर्-अस्तु धर्ममतिर्-अस्तु रिपुक्षयोस्तु,
सन्तान-वृद्धिर्-अभिवांछित-सिद्धिर्-अस्तु।। 50 ।।

दोनों वर-वधू पर फूल डालिये

यावत्-इन्द्रादयो देवा, यावत् चन्द्र दिवाकरौ।
यावत्-रामकथा लोके भूयात्-तावत् स्थिति स्तव।

दोनों वर-वधू पर फूल डालिये

सुरार्चनेन दानेन साधूनां सङ्गमेन च।
आशीर्वादेन विप्राणां जीव त्वं शरदः शतम्।

हमारे सभी प्रकाशन तथा प्रेमनाथ शास्त्री की ज़बान से भरे हुये कैसट्स निम्नलिखित स्थानों से मिल सकते हैं।

D.P.B. PUBLICATION
110, Chawri Bazar, Delhi
Ph : 3273220

तनेजा इल्कट्रॉनिक्स एण्ड टैन्ट हाऊस
अमर कालोनी, लाजपतनगर, देहली
फोन : 6429046

SH. S.N. RAINA
303/9 Sect. Faridabad
Ph : 8-282805, 8-282806, 8-282807

SH. C.L. KAUL
104, Mukti Kalyan Complex
Yari-Road, Andheri (West) Mumbai-400061
Ph : 6293887, 6295479

विजयेश्वर धार्मिक पुस्तक भण्डार
तालाब तिलो जम्मू, फोन : 555763

J.K. BOOK SHOP
Talab Tillo Jammu
Ph : 554522 (PP)

यूनिवर्सल न्यूज़ एजेन्सी
मुकर्जी बाजार, उधमपुर